नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आरक्षण पर नई बहस

मुख्य न्यायाधीश जस्टिस बी.आर. गवई ने रिटायरमेंट से ठीक पहले एक ऐसी बात कह दी है, जिसने देशभर में आरक्षण को लेकर नई बहस छेड़ दी है. सवाल बड़ा है कि क्या अनुसूचित जातियों (एससी) में भी क्रीमी लेयर लागू होनी चाहिए? आंध्र प्रदेश की नई राजधानी अमरावती में दिया गया उनका बयान कानूनी हलकों से लेकर राजनीतिक मंचों तक ज़ोरदार चर्चा का कारण बन गया है. जस्टिस गवई का कहना स्पष्ट है आरक्षण उन्हीं तक पहुंचे, जिनकी ज़रूरत सबसे ज्यादा है. अगर एक आईएएस अधिकारी का बच्चा और एक खेतिहर मजदूर का बच्चा एक ही श्रेणी में रख दिया जाए, तो यह सामाजिक न्याय की भावना से मेल नहीं खाता. जो परिवार सामाजिक-आर्थिक स्तर पर आगे बढ़ चुके हैं, क्या उन्हें लगातार आरक्षण का लाभ मिलता रहना चाहिए? यही मूल सवाल है.

दरअसल, क्रीमी लेयर की अवधारणा सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक इंदिरा साहनी (1992) फैसले में उभरी थी. इस फैसले में ओबीसी समुदाय के भीतर 'सामाजिक रूप से उन्नत वर्ग' को आरक्षण से बाहर रखने का प्रावधान किया गया. लेकिन यह सिद्धांत आज भी केवल ओबीसी पर लागू होता है, न कि एससी और एसटी पर. दलित और आदिवासियों को आरक्षण आर्थिक वजहों से नहीं, बल्कि सदियों के भेदभाव, अस्पृश्यता और सामाजिक अपमान के कारण दिया गया था. यही कारण है कि कई विशेषज्ञों का तर्क है एससी श्रेणी में क्रीमी लेयर लागू करना संविधान की मंशा के अनुरूप नहीं होगा.

उधर, एससी समुदाय में उप-वर्गीकरण की बहस भी सुप्रीम कोर्ट में चल रही है. कई याचिकाएं लंबित हैं. जस्टिस गवई का सुझाव इसी दिशा में एक नया अध्याय जोड़ता है. बहरहाल, आरक्षण का कोई भी बदलाव राजनीति में तूफान ला सकता है. एससी और एसटी देश की सबसे प्रभावशाली मतदाता श्रेणियों में से एक हैं. समर्थकों का दावा है कि क्रीमी लेयर लागू होने से आरक्षण का लाभ सीमित परिवारों में न सिमटेगा और सबसे ज़रूरतमंद लोगों तक पहुंचेगा. विरोधियों का मत है कि एससी समुदाय आज भी जातिगत भेदभाव से जूझ रहा है. ऐसे में क्रीमी लेयर लागू करना सामाजिक सशक्तिकरण की गति रोक सकता है. राजनीतिक रूप से यह मुद्दा इतना संवेदनशील है कि इस पर सर्वसम्मति बनना लगभग असंभव लगता है. यदि इसे लागू करना हो तो संविधान संशोधन तक की जरूरत पड़ सकती है. दरअसल, जस्टिस गवई का विचार उचित है कि आरक्षण को संतुलित और न्यायसंगत बनाना जरूरी है. लेकिन सवाल कई हैं कि,क्या सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षा और पद भी मानदंड होंगे? क्या सरकार के पास इसके लिए ज़रूरी डेटा और संसाधन हैं?

जाहिर है बिना स्पष्ट नीति के कोई भी बदलाव भ्रम और विवाद को जन्म दे सकता है. कुल मिलाकर जस्टिस गवई का सुझाव हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आरक्षण का असली उद्देश्य क्या है,आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करना, या ऐतिहासिक अन्याय को सुधारना? अगर आरक्षण को सही मायने में सबसे नीचे खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना है, तो उसके ढांचे पर शांत दिमाग से पुनर्विचार होना चाहिए. लेकिन इस बहस को संवेदनशीलता, व्यापक सहमति और ठोस कानूनी आधार के बिना आगे नहीं बढ़ाया जा सकता. आज असली सवाल यही है कि क्या आरक्षण समान अवसर का उपाय है, या समान आर्थिक स्थिति का? इस सवाल पर ठहरकर सोचने की जरूरत है, क्योंकि इसका असर आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा.

युवा झारखंड के 25 साल

सपने अधूरे, आकांक्षाएं अधूरी!

विजय कुमार झा

15 नवंबर 2025 को, जब हमारा प्यारा झारखंड अपनी रजत जयंती मना रहा था तो राज्य भर में उत्सव का माहौल होना स्वाभाविक है. 25 वर्ष की युवावस्था में कदम रखते हुए राज्य सरकार पूरे प्रदेश में जश्न मना रही है और कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है. लेकिन, क्या यह केवल उत्सव का समय है, या आत्म-चिंतन का भी? जिस सपने को लेकर अनगिनत आंदोलनकारियों ने अपने जीवन का बलिदान दिया, क्या वह सपना सच हो सका है? जमीनी हकीकत बताती है कि युवा झारखंड के सपने आज भी अधूरे हैं.

अस्थिरता की राजनीति- 25 साल में 14 सरकारें- वर्ष 2000 में झारखंड के साथ ही छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड का उदय हुआ था. लेकिन राजनीतिक स्थिरता के मामले में झारखंड अपने इन साथी राज्यों से बहुत पीछे छूट गया. राजनीतिक अस्थिरता ने राज्य के विकास की गति को बुरी तरह बाधित किया. पिछले 25 वर्षों में सात नेताओं ने मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली. बाबूलाल मरांडी, रघुवर दास, मधु कोड़ा, चम्पाई सोरेन जैसे नेताओं ने एक-एक बार, जबकि शिबू सोरेन, अर्जुन मुंडा ने तीन-तीन बार और हेमंत सोरेन ने चार बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली. 2006 से 2013 तक का दौर विशेष रूप से अस्थिरता भरा रहा. राज्य गठन के बाद 25 वर्षों में झारखंड ने कुल 14 सरकारें देखीं और तीन बार राष्ट्रपति शासन झेला. जबकि, सच्चाई यही है कि एक स्थिर और दूरदर्शी सरकार के बिना कोई भी राज्य विकास की सीढ़ियां नहीं चढ़ सकता. बार-बार सरकारों का बदलना, नीतियों को प्रभावित करता है और विकास परियोजनाओं को लटका देता है. जब सरकारें अस्थिर होती हैं, तो दीर्घकालिक नीतियां और कल्याणकारी योजनाएं दम तोड़ देती हैं, जिसका सीधा शिकार राज्य का गरीब और आदिवासी समुदाय होता है.

भ्रष्टाचार : विकास का सबसे बढ़ा अवरोध- राज्य के विकास में दूसरा सबसे बढ़ा भ्रष्टाचार है. झारखंड में 'अधिकारी और सफेदपोश' मालामाल होते रहे, जबकि गरीब और गरीब होता गया. यह स्थिति इस बात का प्रमाण है कि विकास के लिए आए धन को किस तरह निर्ममता से लूटा गया है. भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों में गिरफ्तार आईएएस अधिकारी, जिन्होंने राज्य की छवि धूमिल की, उनमें पूजा सिंघल मनरेगा घोटाला और अवैध पत्थर खनन से जुड़ेमामलों में आरोपी हैं. कथित शराब घोटाला और जमीन हेराफेरी के मामलों में विनय कुमार चौबे तथा कथित जमीन घोटाले में गिरफ्तार छवि रंजन आज भी सलाखों के पीछे हैं. इसके अलावा, बोकारो जिले की पूर्व उपायुक्त विजया जाधव पर डीएमएफटी फंड में लगभग 500 करोड़ के घोटाले का मामला भी सुर्खियों में है. यह फंड खदान प्रभावित क्षेत्रों के विकास के लिए होता है, लेकिन इसका दुरुपयोग गरीबों के जीवन पर एक सीधा हमला है.

बेरोजगारी और बंधक मजदूर- राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार के कारण राज्य में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित नहीं हो पाया. परिणाम यह है कि लाखों युवा बेरोजगारी से त्रस्त होकर दूसरे राज्यों और विदेशों में पलायन करने पर मजबूर हैं. यह पलायन अक्सर भयानक रूप लेता है. रोजगार की तलाश में ट्यूनीशिया या कैमरून जैसे दूर देशों में गए झारखंड के मजदूरों को बंधक बनाए जाने, वेतन न मिलने और उनसे जबरन काम लिए जाने की खबरें बार-बार सामने आती रही हैं. आंध्र प्रदेश और गुजरात जैसे घरेलू राज्यों से भी प्रवासी मजदूरों को बंधक बनाकर छुड़ाए जाने की घटनाएं राज्य के माथे पर एक काला धब्बा हैं.

जनाकांक्षाएं आज भी अधूरी- आंदोलनकारियों ने झारखंड को जल, जंगल और जमीन पर आधारित एक खुशहाल प्रदेश बनाने का सपना देखा था, जहां स्थानीय लोगों को उनके संसाधनों पर अधिकार मिले और उन्हें रोजगार मिले. लेकिन क्या, स्थानीय युवाओं को रोजगार मिला? क्या शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं आम आदमी तक पहुंची? क्या खनिज संपदा का लाभ जनता को मिला? सच तो यह है कि पिछले 25 सालों में कुछ लोगों का 'अपना विकास' जरूर हुआ है, लेकिन राज्य की बहुसंख्यक आबादी आज भी गरीबी, विस्थापन और बेरोजगारी से जूझ रही है. ग्रामीण आदिवासी महिलाओं और बच्चियों की मानव तस्करी एक संगठित अपराध बन चुका है.

सकारात्मक संदेश और संकल्प की जरूरत

झारखंड को इन अंधेरों से निकलने के लिए एक नए संकल्प की आवश्यकता है. रजत जयंती का यह अवसर हमें याद दिलाता है कि झारखंड केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि एक सपना है. यह संघर्ष से उपजा राज्य है. इस युवा राज्य को इसके स्वर्णिम भविष्य तक पहुंचाने का दायित्व हम सबकी, विशेषकर नेतृत्व की ईमानदारी पर निर्भर करता है. हमें मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि आने वाले वर्षों में झारखंड विकास की दौड़ में बंधक नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता बने. रजत जयंती के इस अवसर पर सरकार और जनता, दोनों को यह संकल्प लेना चाहिए कि वे राजनीतिक अस्थिरता और भ्रष्टाचार को समाप्त कर झारखंड को आंदोलनकारियों के सपने के अनुरूप, खुशहाल और स्थिर राज्य बनाएंगे.

मालवा- निमाड़ की डायरी

मंत्री परमार का बयान भाजपा को क्यों लगा नागवार...?

संजय व्यास

बिहार विधान सभा चुनाव में प्रचंड जीत के बाद प. बंगाल चुनाव के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही भाजपा के सामने प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने मुश्किल पैदा कर दी. हाल ही में आगर-मालवा में बिरसा मुंडा जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए समाज सुधारक बंगलावासी राजा राम मोहन राय पर विवादित टिप्पणी कर दी थी. इसके बाद प. बंगाल की सत्ताधारी पार्टी टीएमसी को मुद्दा मिल गया और इसे बंगाल के गौरव का अपमान बताते हुए भाजपा को घेरने की रणनीति बना ली. जब भाजपा इस बार बंगाल चुनाव में टीएमसी को मात देने की जी-तोड़ कोशिश में लगी है तो ऐसे समय परमार का बयान उसे नागवार लगा.

भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने मामले की गंभीरता को देखते हुए परमार को फटकार के साथ कड़ा संदेश दिया. मंत्री इंदर सिंह परमार ने आनन-फानन राजा राम मोहन राय को लेकर दिए गए अपने विवादित बयान पर माफी मांग ली और पश्चाताप जताया. उन्होंने एक वीडियो जारी कर कहा कि वह अपने बयान को लेकर दुखी हैं और माफी मांगते हैं. वे धर्मांतरण की तात्कालीन प्रक्रिया को रोकने और समाज को इससे बचाने के लिए बिरसा मुंडा की प्रशंसा करना चाहते थे, लेकिन आवेश में गलती से राजा राम मोहन राय पर जबान फिसल गई.

डेमेज कंट्रोल में जुटे भाजपा नेतृत्व ने परमार के साथ ही पार्टी कर्ताधर्ताओं को हिदायद दे दी है कि सोच समझ कर बोलें, ऐसा कोई बयान न दें जिससे पार्टी को मुसीबत उठाना पड़े.

बड़े अपराधों में संलिप्त हो रहा निमाड़ अंचल

निमाड़ क्षेत्र कभी प्रतिबंधित संगठन सिमी की गतिविधियों के मामले में कुख्यात रहा है. कई कारनामें गवाह है. यहां के कुछ युवा इसमें भ्रमित और लिप्त मिले थे. इनमें से कुछ ने देश भर में बड़े कांड को अंजाम भी दिया. अब नई गतिविधि में खंडवा के नकली नोटकांड के तार मालेगांव जैसे शहर से जुड़ रहे हैं. यह घटनाक्रम दिक्कत देने वाले हैं. मालेगांव पहले विस्फोट के कारण चर्चित रहा है. अब यहां जाली नोट के जालसाज महाराष्ट्र पुलिस की गिरफ्त में आए. पूछताछ हुई तो निमाड़ पर भी नकली नोट खपाने के सुराग मिले.

खंडवा जिले के जावर थाना क्षेत्र में पैठिया गांव के मदरसे में रह रहे जुबेर नाम के युवा से 16 लाख रुपए के नकली 500 के नोट मिलने से सनसनी हो गई. निमाड़ क्षेत्र गांजा तस्करी व अवैध हथियारों के बनाने तथा खरीद-फरोख्त में भी बदनाम रहा है. अब बड़े पैमाने पर नकली नोट पकड़ाने के बाद देश भर की जांच एजेंसियों के टारगेट पर खंडवा व निमाड़ आ गया है.

कलसिंह भाबर चर्चा में

राजनीतिक नियुक्तियों में झाबुआ जिले का नंबर लग सकता है. बिहार चुनाव निपटते ही फिर निगम मंडलों में नियुक्तियों की चर्चा तेज हो गई है. बताया जा रहा है कि दिल्ली तक चर्चा पूरी हो चुकी है और निगम मंडलों में नियुक्तियों की शुरुआत अब होने वाली है. थांदला के पूर्व विधायक और भाजपा अजजा मोर्चा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष कल सिंह भाबर को गरीमापूर्ण पद मिलने की संभावना बताई जा रही है. चुंकि निगम-मंडलों में होने वाली नई नियुक्तियों का आधार केवल राजनीतिक न होकर क्षेत्रीय और जातीय संतुलन पर भी टिका रहेगा, माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इस संतुलन को साधने के लिए चरणबद्ध तरीके से नियुक्तियां करेंगे, इसे देखते हुए कल सिंह भाबर को लेकर क्षेत्रवासियों में ज्यादा उम्मीद दिख रही है.

सधी हुई रणनीति से जीतती है बीजेपी

संपूर्ण हिंदी भाषी बड़े राज्यों पर बीजेपी का कब्जा है. यूपी, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, गुजरात में उसकी सरकारें हैं तथा महाराष्ट्र व बिहार में भी उसका जबरदस्त वर्चस्व है. बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए ने कुल 243 में से 202 सीटों पर प्रचंड जीत हासिल की जिसके पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता व बीजेपी कार्यकर्ताओं का निरंतर परिश्रम रहा है. बीजेपी की संगठनात्मक शक्ति का जवाब किसी पार्टी के पास नहीं है. पार्टी के 900 से अधिक वरिष्ठ नेता लगातार 2 महीने से बिहार में चुनाव प्रचार के लिए डटे रहे. गृहमंत्री अमित शाह ने भी कई सप्ताह बिहार में बिताए, बीजेपी की चुनावी रणनीति हमेशा सधी हुई रहती है. स्व. कर्पूरी ठाकुर को भारतरत्न देकर पहले ही प्रधानमंत्री ने बिहारियों का दिल जीत लिया था. उनके जन्मस्थल समस्तीपुर से प्रचार शुरू करते हुए मोदी ने 14 स्थानों पर जनसभा लेकर लालू यादव के समय के जंगल राज को निशाना बनाया था. बीजेपी के नेता-कार्यकर्ता पूरी गंभीरता व निरंतरता से चुनाव प्रचार में जुट जाते हैं. ऐसी निरंतरता विपक्षी दलों में नहीं है. एक चुनाव खत्म होते ही बीजेपी के कार्यकर्ता अगले चुनाव की तैयारी में जुट जाते हैं. पार्टी ने जातिवाद के गणित वाले बिहार में विकास व समाजकल्याण की रणनीति अपनाई, क्योंकि वहां उत्तरप्रदेश के समान धर्म की राजनीति नहीं चल सकती थी. बीजेपी को सर्वाधिक 89 सीटें मिली हैं फिर भी वह 85 सीटों वाले जदयू नेता नीतीशकुमार को फिर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाएगी. वजह यह भी है कि केंद्र में एनडीए सरकार टिकाए रखने के लिए नीतीशकुमार व चंद्राबाबू नायडू का सहयोग बीजेपी को कायम रखना है.

इस बार बीजेपी ने एनडीए में चिराग पासवान की लोजपा और जीतनराम माझी के 'हम' को भी साथ रखने की रणनीति अपनाई. इस वजह से एनडीए का वोट शेयर पिछली बार के 37 प्रतिशत से बढ़कर इस बार 47 प्रतिशत हो गया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जीतने वाले का बढ़ जाता वजन, हारने वाला करता रहता भजन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, किसी ऊंची बिल्डिंग की लिफ्ट में घुसते समय आपने वहां सूचना देखी होगी सिर्फ 6 व्यक्तियों के लिए! मान लीजिए उसमें पहलवान टाइप 5 लोग भी घुस गए तो काफी वजन हो जाएगा

हमने कहा, 'जिन नेताओं ने कहा- ऐ मेरे मौला लिफ्ट करा दे, उन्हें मस्तमौला वोटरों ने चुनाव जिता दिया. जिनका पहले से राजनीति में वजनदार व्यक्तित्व था, उन्हें फिर से सत्तासुंदरी ने वरमाला डाल दी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, लिफ्ट से लिपटना छोड़ो. लपककर सीढ़ी से चढ़ो. ऐसा करना तंदुरुस्ती के लिए बेहतर है. दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने अपने 5 स्टेशनों की सीढ़ियों पर कैलोरी काउंटर लगाए हैं जिनमें यात्रियों के लिए संदेश है कि सीढ़ी चढ़ो और कैलोरी जलाओ.'

हमने कहा, 'हिंदी में कैलोरी को उष्मांक कहते हैं. शरीर स्वस्थ रखने के लिए उतना ही खाओ जितना पचा सको. बच्चों व प्लेयर्स को ज्यादा कैलोरी की आवश्यकता होती है लेकिन कुर्सी या गद्दी पर लगातार बैठकर काम करने वालों को अपनी खुराक सीमित रखनी चाहिए. वे ज्यादा खाएंगे तो मोटापा बढ़ेगा और लोग पूछने लगेंगे क्यों भाई, किस चक्की का आटा खाते हो? डॉक्टर भी बीएमआई इंडेक्स के बारे में बताते हैं कि किस ऊंचाई वाले व्यक्ति की कमर का नाप कितना रहना चाहिए. जहां तोंद बढ़ी या पेट बाहर निकला तो इंसान को ब्लडप्रेशर या डायबिटीज जैसी बीमारियां घेर लेती हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, एक जमाना यह भी था जब दुबले पतले लोगों को सीकिया पहलवान कहकर उनका मजाक उड़ाया जाता था जबकि मोटे आदमी के बारे में कहा जाता था कि खाते-पीते घर का है. आज डॉक्टर कहते हैं कि मोटापा बीमारियों की जड़ है. लोग वजन घटाने के लिए दवाइयां खाते हैं, जिम जाते हैं, डाइटिंग करते हैं. मॉडेल व अभिनेत्रियां चिंतित रहती हैं कि उनका वजन न बढ़ जाए, यह जरूरी नहीं कि हेल्दी बेबी प्रतियोगिता में मोटा और गोलमटोल बच्चा चुना जाए. अब कहा जाने लगा है कि हेल्दी खाना खाओ और हेल्दी रहो. जंक फूड से बचो और पोषण देने वाला संतुलित भोजन करो. इतने पर भी मोटा होना जीन्स पर निर्भर होता है. किसी परिवार में सभी लोग खानदानी तौर पर मोटे पाए जाते हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12084 - डॉ. सागर खादीवाला

1	■	2	3		4	■	5
6		■		■	7		
	■	8				■	
9	10			■	■	11	
■	12		■	13	14	■	■
15		■	16				17
	■	■	18			■	
19					■	20	

ऊपर से नीचे
1. अंत, समाप्ति, मरण 3. सचेत, सतर्क, होशियार 4. स्वर्ण, सोना, धतूरा 5. सलाह, मंत्रणा 8. स्वच्छ, पवित्र, निर्मल (सं.) 10. नील सिंधुवार का पौधा (सं.) 13. मालिक, देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता (उर्दू) 14. कामदेव, वसंत काल (सं.) 15. निःसंदेह, जरूर (उर्दू) 16. खड़ाऊ, जूता 17. एक

बाएं से दाएं
2. प्रसार करने वाला 6. समय, काल, अवसर 7. नाज, चोचला 8. विधान करने वाला, रचने वाला, विधानसभा का सदस्य 9. घरौंदा (उर्दू) 11. चौरस गच या सीमेंट से पक्की की हुई जमीन 12. हल के नीचे लगा हुआ लोहे का फल 13. समान, तुल्य 15. संगी, साथी 16. जिसके सामने और बीच में रहने पर भी उस ओर की वस्तु दिखाई दे सके 18. सौदा बेचने का स्थान 19. कहानी लिखने वाला 20. फासले पर, अंतर पर, जो समीप न हो

Solution 12083

चो	र	द	र	वा	जा	■	■
च	■	र	ज	त	प	ट	■
ला	य	क	■	■	क	मा	न
■	था	ना	■	ड	■	ट	स
अ	र्थ	■	ल	ल	का	र	ना
पा	■	उ	प	ना	म	■	■
हि	सा	ब	■	■	का	बि	ल
ज	■	रा	ह	■	जी	ना	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में रूके कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में एवं प्रभाव में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में अचानक व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लाभदायक अवसर प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को यश प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निजीदायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांतिप्रिय, सौम्य, धैर्यवान तथा मिलनसार होगा, किसी तकनीकी विद्या का ज्ञाता होगा, कार्य करने की क्षमता अच्छी रहेगी, धार्मिक होते हुये पूजा पाठ में रूचि कम रहेगी, पिता का भक्त होगा.

मेष- साहस में वृद्धि होगी, स्वास्थ्य बेहतर रहेगा, मित्रों एवं कुटुम्बियों के साथ रमणीक स्थल की सैर होगी, पारिवारिक कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

वृषभ- मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी हो सकती हे, परिश्रम प्रयास अयिाक करना होगा, गुमी वस्तु मिलेगी, फिज़ूल खर्च रोकने का प्रयास होगा.

मिथुन- शत्रुओं की पराजय होगी, आय में वृद्धि होगी, समयानुकूल उत्तम भोजन मिलेगा, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, प्रियजनों से मेलजोल बढेगा.

कर्क- सामाजिक कार्यो में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, धार्मिक यात्रा का योग है, परिश्रम प्रयास करने से यथेष्ठ सफलता मिलेगी, मान सम्मान में वृद्धि होगी.

सिंह- केरियर में सफलता के लिये सही समय आ गया हे, पारिवारिक मामलों में सफलता मिलेगी, व्यवसायिक मामलों में सहयोग रहेगा.

कन्या- वाहन चलाते समय सावधानी रखें, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, दूसरों पर अधिक भरोसा न करें, संयम से काम लेना हितकर रहेगा.

तुला- पुरानी मित्रता काम आयेगी, शुभ कार्यो में खर्च होगा, इच्छानुसार कार्य बनेगा, यश मिलेगा. आय से अधिक धन खर्च होने का योग है.

वृश्चिक- कामकाज में उतार चढ़ाव रहेगा, परिश्रम की अधिकता रहेगी, अतिथि आगमन का योग है, निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगीं.

धनु- झगड़ों से परेशान होकर काम छोड़ने का मन बनेगा, धैर्य से काम लें, उच्च वर्गीय प्रतिष्ठितजनों से मेलजोल बढ़ेगा, मित्र वर्ग आपकी मदद करेंगे.

मकर- स्वास्थ्य सुधरेगा, धार्मिक रूचि बढ़ेगी, राजनेताओं से संपर्क बढ़ेगा, परिश्रम का लाभ मिलेगा, सावधानी पूर्वक कार्य करना हितकर रहेगा.

कुम्भ- निर्माण कार्य में प्रगति होगी, दिनचर्या नियमित रहेगी, दूर गये मित्र के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा, मनोंवाछित सफलता प्राप्त रहेगी.

मीन- भोतिक सुखों में वृद्धि होगी, धार्मिक यात्रा का योग है, लाभ में संतोष रहेगा, रोगी की चिन्ता रहेगी, व्यापारिक स्थिति को देखकर निर्णय करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

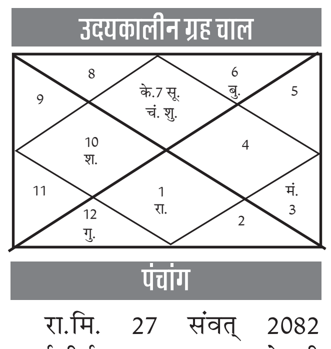

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी भौमवासरे प्रात: 7/2, स्वाती नक्षत्रे दिन-रात, आयुष्मान योगे दिन 9/39, वणिज करणे सू.उ. 6/38, सू.अ. 5/22, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2 ,6.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण त्रयोदशी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से जौ, चना, अरहर, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, मक्का, हल्दी, अरंडी, आदि में तिल, तेल, में तेजी होगी, जिस वस्तु में आज के बने भाव टूटें, उसी में मंदी की चाल चलेगी. भाग्यांक 6282 है.

SUDOKU 7216

5	9		1		2		3	8
			4		5			
2								5
		3		5		4	8	
	7						1	
	5	8		6		9		
8								1
			2		9			
3	4		6		7		5	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7215

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2